Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SISRRJ | Volume 1 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

आध्यात्मिक उन्नति का आधार स्तम्भ संगीत

डॉ० जया शर्मा
रीडर एवं अध्यक्ष, संगीत विभाग, आर्य कन्या पी0जी0 कालेज, हापुड़, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

सारांश– संगीत कला उद्भव भले ही मानव की सहज भावना एवं अदम्य प्रेरणाओं के अभ्यतरं से हुआ हो, उसका विकास और लालन–पालन धर्म के क्रोड में हुआ है। आवश्यकता पड़ने पर संगीत ने हिन्दू धर्म व सभ्यता को बचाया है। तो समय आने पर हिन्दू धर्म ने भारतीय संगीत को आश्रय देकर बचाया ।

मुख्य शब्द– आध्यात्मिक,उन्नति, संगीत,कला, हिन्दू, धर्म, भारतीय।

भारतीय संस्कृति पूर्णतः अध्यात्म भावना से ओत–प्रोत है भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय कलाओं में अध्यात्मिकता ही आधारशिला रही है। ''संगीत'' को कहीं ईश्वर प्राप्त का मार्ग माना गया है तो कहीं उसे साक्षात् ईश्वर का पर्याय। इसी कारण संगीत को आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का साधन मानकर उपासना की गई है तथा ईश्वरोपासना हेतु एकाग्रता प्रदान करने का सशक्त माध्यम। भारत सदा से धर्म प्रधान देश रहा है। यही कारण है कि यहाँ की समस्त कलाएँ दर्शन, चिन्तन, अध्यात्म आदि इसी ओर उन्मुख रही है। अतः संगीत कला तथा धर्म का सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। हमारे प्राचीन ऋषि–मुनि संगीत साधना से आध्यात्मिक विकास के द्वारा ईश्वर को प्राप्त करते थे। आध्यात्मिकता भारतीय संगीत की आत्मा का अनूठा शृंगार है।

देव मंदिर के प्रांगण में वेदों की ऋचाओं के सात गाये जाने वाला 'साम–संगीत' एवं देवालयों में गायन वादन एवं नृत्य की परम्परा भी अध्यात्मिकता से सराबोर थी। इसी परम्परा में संगीत का अध्यात्म अवतरित हुआ। संगीत मन्दिरों में पलता रहा। पूजा, अर्चना, मंत्रोच्चारण, आरती सभी चीजें सांगीतिक रूप में हुआ करती थीं। देवदासियाँ मन्दिरों में ईश्वर के आगे नृत्य किया करती थीं। बाद में संगीत की एक शाखा भक्ति के रूप में बना जो आज तक कायम है। अनेक ध्रुवपद एवं ख्याल राम, कृष्ण, गणेश आदि देवताओं के नाम पर रचे गये।

संगीत वाद्यों में वीणा, सरस्वती, वीणा तालों में ब्रह्म ताल, रूद्र ताल आदि देवताओं के नाम पर रखे गये इससे स्पष्ट होता है कि संगीत सदैव धर्म का ऋणी रहा है।

भारत में नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व में संगीत का आरम्भ धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति से हुआ। चाहे मिश्र हो, बाबिलोन हो, सीरिया हो, यूनान हो या भारत, सभी सभ्यताओं में संगीत का जन्म भक्ति भावना हुआ है। संगीत द्वारा ईश्वर से साक्षात्कार कराने की असीम शक्ति निहित है। संगीत के स्वर मन को एकाग्र करके इतना अधिक लीन, तन्मय और स्थिर कर देते हैं। कि हृदय की चंचल वृत्तियाँ केन्द्रीभूत होकर अन्तर्मुख हो जाती हैं और इधर–उधर भागने नहीं देती हैं। तन्मयता लाने के लिए संगीत के स्वरों में तल्लीन होना अति आवश्यक है। तन्मय होने की स्थिति में नेत्र बन्द हो जाते हैं तथा स्वरों द्वारा एकाग्रता की साधना प्रारम्भ हो जाती है। इसी कारण संगीत को धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्ध का साधन माना गया है। अतः परमात्मा की प्राप्ति के लिए मानव के समक्ष सर्वोच्च साधन संगीत है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में ''जिन पावन चरणों तक में प्राण और मन देकर भी कदापि नहीं पहुँच सकता, गान के माध्यम से उसी के चरणों तक पहुँच गया।''

संगीत के प्राचीनतम रूप पर दृष्टि डालें तो वैदिक युग के संगीत में आध्यात्मिकता मिलती है। इस युग में अनेक प्रकार के वेदों का गायन यज्ञ के समय होता है यह अतिशयोक्ति नहीं है कि सांगीतिक उपासना का भाव विश्व को वैदिक युग से प्राप्त हुआ। इस युग में इस मान्यता ने जोर पकड़ा।

भारतीय संगीत सर्वदा से ही धर्म–भावानुकूल रहा है। धर्म–परायण हिन्दू सदैव साधना के माध्यम से ईश्वर प्राप्ति का प्रयास करते रहे हैं। साधना मार्ग का प्रधान माध्यम संगीत ही है। संगीत को मोक्ष प्राप्ति का माध्यम भी माना गया है। महर्षि याज्ञवल्क्य के अनुसार, ष्जो मनुष्य गीत, बाह्य श्रुति, जाति, ताल आदि में विशारद होता है उसके लिए मोक्ष प्राप्ति सम्भव है।

वीणा वादन तत्वज्ञः श्रुति जाति विशारदः

तालज्ञश्रप्रयालेन मोक्ष मार्ग निगच्छति

अति प्राचीन काल से ही हिन्दू आर्यगण संगीत कला को अत्यन्त पवित्र तथा सर्वोच्च विद्या मानते रहे हैं। वेद पुराणों में प्रचुर मात्रा में इस कला का उल्लेख हुआ है तथा इसे उच्च स्थान दिया गया है। पद्म पुराण में श्रीकृष्ण स्वयं महर्षि नारद से कहते हैं कि ''न तो मैं बैकुंठ में वास करता हूँ और न योगियों के हृदय में। हे नारद, मेरे भक्त जहाँ गायन करते हैं, वहीं मेरा निवास है।''

नाहं वासामि वैकुन्ठे गोगिना हृदय न च।

मद–भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः!!

विश्व साहित्य के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में भक्ति की परम्परा मिलती है। प्रकृति की विचित्र लीलाओं का अनुभव कर वैदिक गायकों ने जगत के मूल में विद्यमान शक्ति का साक्षात्कार किया और उसके विभिन्न रूपों में गीत अथवा सूत्र रच डाले। ऋग्वेद का प्रत्येक सूत्र विभिन्न देवताओं की पूजा/स्तुति में गाया गया गीत है। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा ''वेदों में सामवेद मैं ही हूँ। ऐश्वर्य के समान संगीत का सौन्दर्य भी अनन्त व असीम है।''

सामवेद का गायन आलापों से युक्त शास्त्रीय संगीत के समान रहा। सामवेद का संगीत वह संगीत है जिसमें भक्त ने अपनी भावनाओं को स्वरों में बाँधा । इसमें उदात्त, अनुदात्त व स्वरित से गान होता था तथा समस्त छंद सस्वर गाये जाते थे।

रामायण व महाभारतकाल में संगीत का सम्बन्ध परस्पर बना रहा। श्रीकृष्ण ने स्वयं को प्राप्त करने व मोक्ष प्राप्ति का सलरतम उपाय भक्तित संकीर्तन को बताया। विष्णु पुराण में कहा गया है

''जिस प्रकार अग्नि से स्वर्णादि धातुओं के मल का नाश होता है, उसी प्रकार भक्तिपूर्वक किया हुआ भगवत कीर्तन सभी पातकों का नाश करने का उत्तम साधन है।''

विलज्जते उद्यायति नृत्यते च।

मदुभक्ति युक्तो भुवनं पुनति।।

अर्थात् जो लज्जा छोड़कर उच्च स्वरों में गान करता है नृत्य करने लगता है, ऐसा भक्त समस्त लोगों को पवित्र करता है। प्राचीन काल से ही संगीत का उपयोग ईश्वरोपासना में किया जाता था। भगवान श्रीकृष्ण का वृन्दावन में ब्रजगोपियों के साथ रासलीला करना संगीत काही आयोजन रहता था।

शिव का तांडव, पार्वती का लास्य नृत्य जगत में प्रसिद्ध है। तांडव से 'ता' और लास्य से 'ला' को लेकर ही 'ताल' शब्द की उत्पत्ति हुई है। भक्ति संगीत की यह धारा वैदिक काल के बाद रामायण, महाभारत तथा पुराणों से होती हुई आधुनिक काल तक चली आ रही है। संगीत भक्त कवियों के हृदय का कंठहार रहा है। भक्ति गायन कुछ और नहीं केवल सुखद आशाओं और शुभ समाचारों का प्रसार ही है।

संगीत संध्या हृदय से निकलता है। अतः हृदय की भावना पवित्र होनी चाहिए। भक्त कवि सूरदास ने तो संगीत का सम्बन्ध जीवन से जोड़ा है। इनके गीतों में जीवन का सौन्दर्य उभरकर मानव सृष्टि को मोहित करने लगा है। जन्मान्ध होते हुए भी सूर के पदों में प्रत्येक राग–रागिनी को लेकर रचना की है।

डॉ० रामकुमार वर्मा कहते हैं– ''सूर की कविता में संगीत की धारा इतनी सुकुमार चाल से चलती है कि हमें यह ज्ञात होने लगता है कि हम स्वर्ग के किसी स्पर्श का अनुभव कर रहे हैं।''

सूरदास ने गायन, वादन, नृत्य इन तीनों को अपनाया है और अपने युग में राग रागनियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। मध्यकालीन भक्त कवियों में सूर, मीरा, गुरुनानक, स्वामी हरिदास, नन्ददास आदि ने झांझ, एकतारा, करताल आदि की मधुर ध्वनियों में डूबकर गली–गली में प्रभु भक्ति से ओत–प्रोत गीत गाये। सगुण या निर्गुण भक्त ज्ञान मार्गी या कीर्तन मार्गी सभी ने आराधना का माध्यम संगीत को माना है। बल्लभाचार्य और उनका अष्टछाप सम्प्रदाय अपने कीर्तन संगीत के लिए प्रसिद्ध है। यह राग–रागिनियों का अमूल्य कोष है और भारतीय राग परम्परा के इतिहास में महत्वपूर्ण है।

संगीत की मूलगत भक्ति भावना सभी प्रदेशों में व्याप्त रही हैं। जिसने जनता को एकसूत्र में बांधा, उत्तर प्रदेश में सूर और तुलसी राजस्थान में मीरा बंगाल में चौतन्य, बिहार में जयदेव, महाराष्ट्र में समर्थ रामदास, गुजरात में नरसी तथा कर्नाटक में त्यागराज आदि इसी परम्परा के नायक व प्रचारक रहे।

स्पष्ट है कि संगीत का सम्बन्ध हर काल व परिस्थिति में धर्म से रहा।

धर्म का कोई भी पंथ, हो सम्प्रदाय हो। कहा भी है–

पूजा कोटियगुणं स्त्रोत्र स्त्रोत्रान्त कोटिगुर्णी जपा।

जपात्कोटि गुणं गान गानात्परतरं नहि।।

अर्थात् संगीत कला उद्‌भव भले ही मानव की सहज भावना एवं अदम्य प्रेरणाओं के अभ्यतरं से हुआ हो, उसका विकास और लालन–पालन धर्म के क्रोड में हुआ है। आवश्यकता पड़ने पर संगीत ने हिन्दू धर्म व सभ्यता को बचाया है। तो समय आने पर हिन्दू धर्म ने भारतीय संगीत को आश्रय देकर बचाया ।

सन्दर्भ सूची

1. संगीत मणि – डॉ0 महारानी शर्मा
2. संगीत पत्रिका – हाथरस – 2007, 2008
3. स्मारिका प्रयास संगीत समिति – 2008
4. संगीतायन – डॉ0 सीमा चौधरी
5. भारतीय संगीत का इतिहास – लक्ष्मी नारायण गर्ग
6. राष्ट्रीय एकता में संगीत की भूमिका – डॉ0 सत्या भार्गव
7. भक्तिकालीन काव्य में राग और रस – डॉ0 दिनेश चन्द्र गुप्त